हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला में *पार्थेनियम हिस्टेरोफोरस* (गाजर घास/काँग्रेस घास) खरपतवार पर जागरूक सप्ताह कार्यक्रम की रिपोर्ट

पार्थेनियम हिस्टेरोफोरस (गाजर घास/काँग्रेस घास) एक बहुत ही आवांछनीय खरपतवार है, जो कि गाजर की तरह दिखता है, इसीलिए इसका नाम गाजर घास भी रखा गया है । यह खरपतवार परिस्थितिकी, कृषि एवं हॉर्टिकल्चर फसलों को काफी नुकसान पहुंचाता है । इसके अलावा यह इंसान एवं जानवरों के स्वस्थ्य को भी नुकसान पहुंचाता है । इसके कुप्रभाव से बचने हेतु हर वर्ष अगस्त माह में 16 से 22 तारीख के दौरान जागरूकता सप्ताह मनाया जाता है । हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला द्वारा दिनांक 22 अगस्त, 2022 को *पार्थेनियम* जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया । इस कार्यक्रम में संस्थान के सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों, अनुसंधान कर्मचारियों एवं शोधर्थियों ने भाग लिया । इसके अलावा संस्थान के वन विज्ञान केंद्र धर्मपुर, जिला मंडी, हिमाचल प्रदेश, वन विज्ञान केंद्र, जम्मू, जम्मू और कश्मीर तथा नालागढ़ फील्ड अनुसंधान स्टेशन, सोलन हिमाचल प्रदेश में पार्थेनियम उन्मूलन अभियान चलाया गया ।

सबसे पहले **डॉ॰ जोगिन्द्र सिंह चौहान, मुख्य तकनीकी अधिकारी,** विस्तार प्रभाग ने संस्थान के निदेशक-प्रभारी, सभी वैज्ञानिकों, अधिकारियों और अनुसंधान कर्मचारियों का स्वागत किया और *पार्थेनियम* जागरूकता सप्ताह के महत्व पर प्रकाश डाला ।

डॉ. संदीप शर्मा, निदेशक-प्रभारी ने गाजर घास के नियंत्रण पर जानकारी सांझा की । डॉ॰ शर्मा ने कहा कि गाजर घास कि रोकथाम के लिए इसके पौधों पर फूल आने से पहले ही उखाड़ने का कार्य करना चाहिए तथा गड्डे मे एकत्रित कर सुखने पर जला देना चाहिए । उन्होने कहा कि इसे उखाड़ने के दौरान हाथों पर दस्ताने पहन कर खुद को सुरक्षित रखना चाहिए । इसके अलावा इसका नियंत्रण मेक्सिकन-बीटल-कीट द्वारा भी होता है । खेतों में गाजर घास को नियंत्रित करने हेतु, इसके निकालने से पहले *एलाकलोर हरविसाइड*

2 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर के हिसाब से छिड़का जा सकता है । गाजर घास से कम्पोस्ट/खाद बना कर दोहरा लाभ प्राप्त किया जा सकता है, एक ओर इसके फैलने को रोका जा सकता है साथ में इससे उपयोग हेतु खाद प्राप्त होती है । *पार्थेनियम खाद* में 1.05% नाइट्रोजन, 0.84 % फोस्फोरस तथा 1.11 % पोटाशियम पाया जाता है ।

डॉ. रंजीत कुमार, वैज्ञानिक-ई ने "*पार्थेनियम हिस्टेरोफोरस*: उत्तर पश्चिमी हिमालयन के पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रभाव" विषय पर वक्तव्य दिया । उन्होनें कहा कि गाजर घास मनुष्य एवं जानवरों के स्वास्थय पर बुरा असर करता है । यह विभिन्न तरह के चर्म रोगों का कारण बनता है । गाजर घास मुख्यत बीजों द्वारा उगता और फैलता है । एक वर्ग मीटर में गाजर घास 1.5 लाख तक़ बीज का उत्पादन करता है । गाजर घास का बीज कई वर्षों तक तक भी जमीन में जीवित रह सकता है तथा अनुकूल परिस्थितियाँ आने पर पुनः उगना शुरू हो जाता है । इसके अलावा उन्होंने गाजर घास संक्रमित जगहों के बारे में, गाजर घास के जीवन-चक्र के बारे में, इसके पारिस्थितिकी तंत्र पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के बारे में बताया । डॉ. कुमार ने गाजर घास से कीटनाशक और खाद बनाने की संभावनाओं पर भी चर्चा की ।

डॉ॰ जगदीश सिंह, वैज्ञानिक-एफ, प्रमुख-विस्तार प्रभाग ने बताया कि वैज्ञानिक, अधिकारी एवं समस्त अनुसंधान स्टाफ गाजर घास के बारे में जागरूक है, अतः जब भी वे अनुसंधान कार्य हेतु किसी भी क्षेत्र में जाये, वहाँ पर लोगों को गाजर घास के बारे में जागरूक करें । कार्यक्रम का समापन **डॉ॰ जोगिन्द्र चौहान, मुख्य तकनीकी अधिकारी** के धन्यवाद प्रस्ताव से हुआ ।

WELCOME
HIMALAYAN FOREST RESEARCH INSTITUTE

EARCH INSTITUTE